रिकॉर्ड:- तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो..... ओम् शान्ती प्रातः क्लास 16-1-1967

ऊँच ते ऊँच भगवान की ऊँच ते ऊँच महिमा भी की है। और फिर उनकी ग्लानी भी की है। अब ऊँच ते ऊँच बाप आकर खुद अपना परिचय देते है। और फिर जब रावण राज्य शुरू होता है तो वो फिर अपनी ऊँचाई दिखलाता है। भक्ति मार्ग की। भक्ति ही भक्ति है। राज्य ही उनका है। इसलिये कहा जाता है रावण राज्य। राम और रावण की भेंट की जाती है। बाकी वो राम तो त्रेता का राजा हुआ ना। उनके लिये नही कहा जाता है। रावण है आधा कल्प का राजा। ऐसे नही कि राम आधा कल्प का राजा है। नही, यह डिटेल में समझने की बहुत बातें है। यह तो बिलकुल सहज बात है समझने की। हम सब भाई-2 है। हम सबका बाप वो एक निराकार है। बाप को मालूम है इस समय हमारे सब बच्चे रावण की जेल में है। काम चिता पर बैठ सब काले हो गये है। यह बाप जानते है। आत्मा में ही सारी नालेज है ना। इसमें भी सबसें जास्ती महत्व है दुनिया में आत्मा और परमात्मा का। इतनी छोटी सी आत्मा में कितना पार्ट नूंधा हुआ है। जो कि बजाती रहती है। देह अभिमान में आकर पार्ट बजाती है तो स्वधर्म को भूल जाती है। अभी बाप आकर आत्म अभिमानी बनाते है। क्यों कि आत्मा ही कहती है कि हम पावन बनें। तो बाप कहते है मामेकम् याद करो। आत्मा पुकारती है। हे परमपिता परमात्मा, पतित पावन, हम आत्मायें पतित बन गई हैं। संस्कार तो सब आत्मा में है ना। आत्मा सिर्फ कहती है हम पतित बनी है। पतित कहा जाता है जो विकार में जाते है। पतित मनुष्य पावन निरविकारी देवताओं की आगें जाकर उनकी महिमा गाते है। बाप समझाते है तुम ही पुज्य देवता थे। फिर 84 जन्म लेते-2 नीचे जरूर उतरना पड़े। यह खुद ही पतित सें पावन, पावन सें पतित होते आये है। सारा ज्ञान बाप आकर इस शरीर में समझाते है। अभी सबका अन्तिम जन्म है। सबको हिसाब किताब चुक्तु कर जाना है। बाबा सा० सबको दिखा देते है। पतित को अपने विकर्मों के दण्ड जरूर भोगनें पड़ते है। पिछाड़ी का कोई जन्म देकर ही सजा कोई मनुष्य तन में ही सजा खावेंगें। इसलिये शरीर जरूर धारण करना पड़ता है। आत्मा फील करती है हम सजा भोग रही है। जैसे काशी कलवट खाते समय दण्ड भोगते है। पापों का सा० होता है। आत्मा को सजा फील होती होगी। आत्मा गर्भ जेल में ही कितनी छोटी, इतनी छोटी आत्मा वहाँ भी फील करती है। तब तो कहती है क्षमा करो। हम फिर ऐसे नही करेंगें। यह सब सा० होता है। सा० सें ही क्षमा मांगते हैं। फील करते है। दुःख भोगते है। सबसें जास्ती महत्व है आत्मा और परमात्मा का। आत्मा कैसे 84 जन्मों का पार्ट बजाती है तो आत्मा सबसें पावरफुल हुई ना। सारे ड्रामा में महत्व है आत्मा और परमात्मा का। जिसको और कोई भी नही जानते है। एक भी मनुष्य नही जानते है आत्मा क्या है परमात्मा क्या है। सन्यासी भी यह नही जानते है। अल्प पवित्र बनते है, इसलिये उनके आगे जाकर नमन करते है। इनहों सें डरते भी है। कहीं इनको नाराज करनें से भारत को कुछ हो नही जाये। यह साधु सन्यासी तो है ही शंकराचार्य के वंश वाले। वो आते ही है रजोप्रधान समय में। वहाँ क्यों करेंगें। यह तो देरी सें आते है। परन्तु वो लोग तो डर जाते है। ड्रामा अनुसार यह भी चलता है। तुम बच्चों को अभी ज्ञान है कि यह कोई नई बात नही है। कल्प पहले भी यह चला था। अपने गुण गाते रहते है। जगत गुरूओं को तो वास्तव में जगत को ज्ञान देना चाहिये ना कि पोलिटीकल बातों में पड़ना चाहिये। आजकल तो यह भी एम, पी, आद बनने के लिये कोशिश करते रहते है। सन्त फतह सिंघ महात्मा कहलाते है आजकल वो भी वोटों में खड़ें होनें कोशिश करते रहते है। वास्तव में उनका तो यह काम नही है ना। कहते भी हैं ज्ञान भक्ति वैराग। परन्तु अर्थ नही समझते है। बाबा नें तो इन साधुओं आद का संग बहुत किया हुआ है। सिर्फ नाम ले लेते है। अभी तुम बच्चे अच्छी रीत जानते हो कि अभी हम पुरानी दुनिया सें नई दुनिया में जाते है। वो है नई दुनियां, वो है दिन। यह रात है। तो दिन में जाने लिये रात (पुरानी दुनिया) सें वैराग किया जाता है। रात में है रावण राज्य। वो तो अब खत्म हो जाना है उससें क्या अब दिल लगानी है। बाप कहते है कोई भी देह धारी से दिल नही लगानी है। आत्मा कहती है कि एक बाप को

देता करना है। भक्त भगवान को ही याद करते हैं कि हे भगवान हमको आकर सुख शान्ती का वर्सा दो। भक्ति में तो दुःख है ना। सब झूठ ही झूठ बोलते है। यह तो बाप की ग्लानी ही है। भक्ति मार्ग में तो कुर्बान जाते है। बली चढ़ते हैं। शंकर पर भी बलि चढ़ते हैं। यहां बल चढ़ने की तो कोई बात ही नही है। हम तो जीते जी मरते हैं। बलि चढ़ गये माना मर गये। यह है जीते जी बल। जीते जी मर कर बाप का बना है क्यों कि उनसे वर्सा लेना है। उनकी मत पर चलना है। जीते जी बलि चढ़ना, बली जाना वास्तव में अभी की बात है। भक्ति मार्ग में वो फिर कितनी जीवघातआद करते है। यहां जीवघातकी बात ही नही। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। बाप से ही योग लगाओ। देह अभिमान में मत आओ। उठते बैठते बाप को याद करने का पुरुषार्थ करना है। 100% पास तो कोई हो नही सकते हैं। [illegible] भूलें करते रहते है। सावधानी नहीं मिलेगी तो भूलें छोड़ेंगे कैसे? माया किसीको भी छोड़ती नही है। खुद भी कहते हैं बाबा हम माया से हार खा लेते हैं। पुरुषार्थ करते भी हैं फिर भी पता नही क्या हो जाता है। हमसे इतनी बड़ी भूल पता नही कैसे हो जाती है। समझते भी है कि इससे हमारा नाम बदनाम होगा ब्राहमण कुल में। फिर भी माया का ऐसे वार होता है जो समझ में ही नही आता है। देह अभिमन में आने से जैसे कि वे बेसमझ बन जाते हैं। बेसमझी का काम होता है तो फिर ग्लानी भी होती है। वर्सा भी कम हो जाता है। ऐसे बहुत भूलें करते है। देखो मथुरा के सेन्टर का नारायण कुमार ब्रह्मचारी था। फिर माया ने ऐसे वार से थप्पड़ लगाया जैसे

*******************************************************

कोई गुस्से में आकर कोई को पादर मारने लगपड़ते है। माया भी ऐसे ही चोट ऐसी मारती है। जो बस। तो एकदम फंस मरा। सेन्टर चलाते थे बहुतों को कहते थे काम महाशत्रु है। और खुद काम के वश होकर काला मुंहकर दिया है। अब पछताते हैं। अब तो फिर से बहुत ही मेहनत करनी पड़ेगी। अपना भी नुकसान दूसरे का भी नुकसान किया। अच्छा अब फिर समृती में आता है कि बाबा भूल हो गई। कितना घाव हो गया। अब बाप तो कहते है दे दान तो छूटे ग्रहण। राहू का ग्रहण बैठता है तो फिर वो टाइम लेता है। चाढ़ी चढ़ कर फिर उतरना मुश्किल होता है। मनुष्य को शराब की आदत पड़ती है तो फिरवो छुडाने में कितनी मुश्किलात लगती हैं। सबको जरती है काला मुंह करना। यह छोड़ना बड़ा मुश्किल होता है। घड़ी-2 और याद आता है। फिर बच्चा पैदा हुआ तो और ही याद पड़ेगी। हम तो अब सबको भूलने की कोशिश कर एक को याद करते है। वो फिर याद के लिये प्रैक्टिस करते रहते है। तो सब कहेंगे ना कि यह क्या हमको ज्ञान देंगे। उनका कोई सुनेगा नही। ऐसे-2 भी इत्तफाक होते है ना। इसमें सम्भाल बहुत करनी पडती है। माया बड़ी तीखी है। सारा दिन शिव बाबा को याद करने का ही बयाल रहना चाहिये। अब नाटक पूरा होता है हमको जाना है। यह शरीर भी खतम हो जाना है। जितना बाप को याद करेंगे तो देह अभिमान छूट जावेगा। और कोई की याद होगी तो वो वैर जरूर लेंगे। कितनी बड़ी मंजिल है। सिवाय एक बाप के और कोई के साथ दिल नही लगानी है। नही तो वो जरूर सामने आवेगा। वैर जरूर लेंगे। बहुत ऊंची मंजिल है। कहना तो बड़ा सहज है। लाखों में कोई माला का दाना निकलता है। कोई-2 को स्कालरशिप भी मिलती है ना। दो तीन [illegible] के लिये। जो अच्छी मेहनत करेंगेजरूर स्कालरशिप लेंगे। समझा जाता है कल्प पहले जो पुरुषार्थ किया है वो ही करेंगे। साखी होकर देखना है मैं कैसी सार्विस करता हूं। बहुत बच्चे चाहते हैंजिसमानी सर्विस छोड़ इसमें ही लग जावें। परन्तु बाबा सरकमस्टान्स भी देखते है। अकेला है कोई बन्धननही हैतो हर्जा नही है। फिर भी कहते है नोकरी भी करो। और यह धन्धा भी करो। नोकरी में भी बहुतों साथ मुलाकात होगी। कोई बन्धन है कोई का नां भी है। तो बाप समझाते है जितना हो सकेसर्विस तरफ ध्यान देते रहो। अच्छा एक मास पगार नही मिलेगा। सर्विस में लग जाते है। इस सर्विस से तो बहुत बड़ी आमदनी होगी। रिफरैश होकर जावेंगे। बाप समझाते है तुम बच्चों को ज्ञान तो बहुत मिला हुआ है। बच्चों द्वारा भी बाप बहुत ही सर्विस करते रहते हैं। प्रदर्शनी में भी, कोई में प्रजा की सर्विस करना है। सर्विस तो करनी ही है।

नींद कैसे करें। शिव बाबा तो है ही जागती ज्योत। सदैव जागनें वाला। हमारी आत्मा थक कर सो जाती है। थकता शरीर है। फिर आत्मा भी क्या करें। शरीर काम नही देता है। बाप तो अथक है नां। वो है ही जागती ज्योत। सारी दुनिया को जगाते हैं। उनका पार्ट ही वन्डर फुल है जिसको तुम बच्चों में भी यथाशक्ति थोड़े जानते है। कालों का काल है बाप। उनकी आज्ञा नही मानेंगें तो धर्म राज से दण्ड खावेंगें। फिर भी देह अभिमान आकर आज्ञा का बहुत उल्लंघन करते है। बाबा डायरेक्शन देते है कब भी जिज्ञासुओं आद से सर्विस नां लो। यह कायदा है। तुम खुद सरवेन्ट हो। सर्विस से यहां सुख लेंगे तो वहां का सुख कम हो जावेगा। फिर भी छोड़ते नही है। आदत पड़ जाती है तो सरवेन्ट बिना रह नही सकते है। इनडिपेण्डेंट रहेंगें तब सरवेन्ट भी रख सकेंगें। इसलिये कहते है कि हम तो इनडिपेण्डेंट रहेंगें। कोई सम्भालने वाला नां हो। परन्तु बाप कहते है डिपेण्डेन्ट रहना अच्छा है। तुम सब बाप पर ही डिपेन्ड करते हो। इनडिपेण्डेन्ट बनने से गिर पड़ते है तुम सब डिपेन्ड करते हो शिव बाबा पर। सारी दुनिया डिपेन्ड करती है। तब तो कहते हैं हे पतित पावन आओ। उनसे ही सुख शान्ती मिलती है। परन्तु समझते नही है। यह भक्ति मार्ग का समय भी पास करना ही है। जब रात पूरी हो तबतो बाप भी आवे। एक सेकिंड का भी फर्क नहीपड़ सकता है। बाप कहते है मैं इस ड्रामा को जानने वाला हूं। ड्रामा की आद मध्य अन्त को कोई भी नही जान सकते है। सतयुग से लेकर यह ज्ञान प्रायःलोप है। इसको ही ज्ञान कहा जाता है। बाकी वो तो है भक्ति। तुम रचता को और रचना की आद मध्य अन्त को जानते हो। रिषी मुनी भी कहते थे हम नही जानते है। तो नास्तक ठहरे। नां जाननें कारण गिरते ही रहते है। सजा खाकर एकदम आयरन ऐज़ में घुस पड़े हैं तब तो बाप आते है। बच्चे समझते हैं हम कुछ भी नही जानते थे। अब जान गये है। बाप को नालेज फुल कहते है हमको वो नालेज मिल रही है। बच्चों को नशा भी अच्छा होना चाहिये। जिन में ज्ञान है। बाकी तो है ही भूक बसर। बसर खाया जाता है, बाकी भूक को फेंक जाता है। जो अच्छी सर्विस करते है उनको भूक
******
कहेंगें बाकियों को भूक कहेंगें। भूक अर्थात दास-दासियां। नौकर चाकर बनेंगें। यह तो समझते है नां कि ज्ञान नही है तो भूक ही भूक है। राजधानी स्थापन होती है। कोई तो प्रजा में भी साधारणनौकर चाकर बनेंगें ज़रा भी ज्ञान समझ में नही आता है। वण्डर है नां। ज्ञान है तो बहुत आसान। 84जन्मों का चक्र अब पूरा हुआ है। अब जाना है घर। हम ड्रामा के मुख्य ऐक्टर्स है। सारे ड्रामा को जान गये है। सारे ड्रामा के हीरो हिरोईन ऐक्टर्स हम है। कितना सहज है। परन्तु तकदीर में नही है तो तदबीर भी क्या करें। पढ़ाई में ऐसा होता है। कोई नापास हो जाते है। कितना बड़ा स्कूल है। राजधानी स्थापन होनी है। अब जितना जो पढ़ेंगें। बच्चे भी जान सकते है कि हम क्या पद पावेंगें। ढ़ेर के ढ़ेर है। सब वारस तो नही बनेंगें। दिखाते है हम तो वारस बन नां सकें। पवित्र बनना बड़ा मुश्किल है। बाप कितना सहज समझाते है। अब नाटक पूरा होता है। बाप की याद से सतोप्रधान बन, सतोप्रधान दुनिया के मालिक बनना है। जितना हो सकें याद में रहना है। तकदीर में ही नही तो फिर बाप के बदले और -2को याद करते रहते है। दिल लगाने से फिर रोना भी बहुत पड़ेगा। बाप कहते है इस पुरानी दुनिया से दिल नही लगानी है। यह खत्म होनी है। यह तो किसीको पता नही है नां।वो तो समझते है कलियुग अजुन बाकी समय चलना है।घोर नींद में सोये पड़े है। तुम्हारा यह प्रदर्शनी सर्विस का विहंग मार्ग निकला है। प्रजा बनाने का।राजा रानी भी कोई निकल ही पड़ेंगें। बहुत ही है जो सर्विस का अच्छा ही शौक रखते है। फिर कोई गरीब कोई फिर साहुकार है। औरों को आप समान बनाते है। इसका भी फायदा तो मिलता है नां! अंधों की लाठी बनना है। सिर्फ इतना बताना है कि बाप को और वर्से को याद करो। विनाश सामने खड़ा है। जितना विनाश का समय नजदीक आता जावेगा तो तुम्हारी सर्विस भी वृद्धी को पाती रहेगी। समझेंगें बरोबर ठीक है। तुम रड़िया तो मारते ही रहते हो कि विनाश होने वाला है। (अच्छा जी इसका बाकी हिस्सा फिर दिखावेंगे) ओम